प्रति

इस सं
से कई
है। '
कहानि
के प्रि

इस सं
जो स
शासन
कहती
नरसंह
का प
शिख
के आ
करती
लिखी
इसी

इस त
भारत
व्यवर
ढंग से

विकास पेपर बैक्स
मेन रोड, गांधी नगर, दिल्ली-110031

प्रतिहिंसा तथा अन्य कहानियाँ

मुद्राराक्षस

© लेखक

प्रकाशक
विकास पेपरबैक्स
IX/221, मेन रोड, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1992

मूल्य
पचास रुपये

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-110032

PRATIHINSA TATHA ANYA KAHANIYAN (Hindi)
by Mudrarakshas
Price : Rs. 50.00

अपने प्रिय साथी
विलायत जाफ़री को

जैसे उसकी जान में जान आई। धीरे से बोला, "श्रीमान् मुख्यमन्त्री जी ने पुछवाया है कि आपके विकास खण्ड में तो यूसुफ नाम का कोई आदमी है ही नहीं, फिर मरनेवालों की सूची में उसका नाम कैसे आ गया ?"

मैं देर तक खामोशी से उस आदमी को घूरता रहा या स्थिति पर गौर करता रहा फिर बोला, "सूची में नाम यूसुफ वल्द हनीफ है। इस्माइलगंज में जो यूसुफ था वो यूसुफ वल्द अख्तर था। इस मामले में प्रशासन को सावधानी बरतने की आदत होती है। वल्दियत यूसुफ की रोती-कलपती बीवी ने लिखाई थी पर लिखी तो मैंने थी। फिर बीवी को लिखना-पढ़ना नहीं आता। सही वल्दियत लिख लेना तो मेरा फर्ज था न।"

इस बात पर वह आदमी मुझे देर तक घूरता रहा फिर उठ गया, "हम लोगों की परेशानी दूर हो गई।"

उपसंहार

नन्दलाल के सैलून के सामने साग बेचनेवाले यूसुफ मियाँ इसीलिए नहीं आए थे उस दिन। वे नहीं आए थे क्योंकि प्रधानमन्त्री के पीनेवाले पानी को देखते हुए वे प्यास से मर गए थे। ये यूसुफ मियाँ यूसुफ वल्द अख्तर ही थे, सरकारी फाइलवाले यूसुफ वल्द हनीफ नहीं। तीन पहिए-वाली साइकिल बन जाने से खुश, बच्चों को साथ लेकर प्रधानमन्त्री का पानी देखने गए थे।

मगर मैं इस कहानी को यूसुफ वल्द हनीफ की तरफ मोड़ना चाहता हूँ और यकीन दिलाना चाहता हूँ कि भीड़ में सिर पर दुहत्थड़ मारकर चीत्कार कर उठनेवाली औरत उनकी बीवी नहीं कोई और थी और वह सचमुच पायल खोने पर रोयी थी, खाविंद खोने पर नहीं। मैं यह भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि यूसुफ मियाँ आज इसलिए नहीं आए कि वे उसी तीन पहिएवाली साइकिल को ठीक कराकर बीवी-बच्चों के साथ सैर पर निकल गए थे। वैसे भी शहर के दक्षिण की तरफ जो सड़क दूर तक चली गई है उसकी धुंध के जाले को फाड़कर कुछ क्षणों के लिए जो साइकिल-सवार प्रकट होता है उसे पहचाना भी कहाँ जा सकता है !

हीराबाई नाचेगी

यह तीसरी बार हुआ था और बिल्कुल उसी तरह, जैसे पहले दो बार।

वैसे तो वे लोग इस बार भी बुलडोजर लाए थे, लेकिन वह दूर ही खड़ा रहा। दो मोटर-ठेलों में आए सिपाही सबसे पहले जोर-जोर से चीखते और निरुद्देश्य लाठियाँ पटकते हुए दौड़े। उनकी इस हरकत से मर्दों की तुलना में औरतों और बच्चों में ज्यादा दहशत फैली। और इनसे भी ज्यादा डर गए वहाँ घूमनेवाले कुत्ते, सूअर, कुछ मुर्गियाँ, बकरियाँ और तोते। इस सबसे वहाँ एक जबरदस्त शोर मच गया। शोर ने घबराहट और ज्यादा बढ़ा दी। लिहाजा मर्द, जो कम डरे थे, इस वक्त बस्ती उजाड़े जाने के इस अभियान का विरोध करने के बजाय जरूरी सामान बचाने के लिए भागे।

सिपाहियों के पीछे लम्बी लोहे की सलाखों और हथौड़ों से लैस कुछ लोग बड़े इत्मीनान से वहाँ बने छोटे-छोटे घर गिराने लगे। उन्हें गिराने में ज्यादा मेहनत नहीं पड़ रही थी।

बस्ती में ज्यादातर मकान आम झोंपड़ियों से भी ज्यादा गिरी हालत की चीज थे। उनकी छतों के बजाय बाँसों और टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियों के पिंजर पर पुराने टाट से लेकर फटे हुए पॉलिथीन की चादर तक टूटी-सड़ी रस्सियों से बाँध दी गई थी और ये मेहनत और होशियारी से बनाई छतें हवा में उड़ न जाएँ, इसलिए उन पर बहुत-से ईंट-पत्थर लाद दिए गए थे। ऐसे मकानों की दीवारें बनाना सबसे मुश्किल काम था और वह अकसर लम्बे अरसे में पूरा होता था; क्योंकि इन दीवारों के लिए धीरे-धीरे करके दूर-दूर से ईंटें चुराकर लानी होती थीं।

यह घर ज्यादा बड़ी जरूरतें पूरी नहीं करता था। इसमें अकसर रेंगकर या बहुत झुककर सिर्फ सोने या धूप और बारिश से बचने की कोशिश की

जा सकती थी। बारिश में आसपास का पानी अन्दर भी न भर जाए, इस-लिए नीचे का फर्श थोड़ा ऊँचा, एक चबूतरे जैसा बना लिया जाता था। हालाँकि इसमें छत होती है, पर बारिश में भीगने से बच पाना मुश्किल ही होता था। इन झोंपड़ियों के बीच एक सूअर या आदमी के चलने भर की जगह छूटी रहती थी, जिसमें बहुत ज्यादा कीचड़ हो जाता था।

इस तरह के मकानोंवाली बस्ती उजाड़ने के काम में नगरपालिकावालों को ज्यादा मेहनत नहीं करनी होती थी। लोहे की छड़ से उभारकर छत पर एक धक्का मार देने से ही पूरा घर नंगा हो जाता था। इसके बाद हथौड़ेवाला आदमी बाकी बची छोटी-छोटी दीवारों पर दो-तीन चोटें लगा देता था। इतने के बाद धीरे-धीरे साल-डेढ़ साल में उगा घर मलबे और कूड़े में बदल जाता था।

करीब डेढ़ घण्टे की इस कार्यवाही के बाद जब नगरपालिकावाले वहाँ से चले, तो औरतों ने गालियाँ देनी शुरू कर दीं। कुछ एक ने गुस्से में आकर जाते हुए सिपाहियों के पीछे ईंटों के टुकड़े भी फेंके। वे चीख-चीख-कर रोयीं भी, फिर तुरन्त ही वे मलबे को खोदने लगीं। बहुत-सा सामान ऐसा था, जो पिचक जाने के बावजूद बचाया जा सकता था, जैसे मैली काली पतीलियाँ, लोहे या प्लास्टिक के डिब्बे, या कनस्तर।

नेतराम कुम्हार की बीवी जोर-जोर से रोने लगी थी, क्योंकि झोंपड़ी के साथ ही उसके ज्यादातर बर्तन चूर-चूर हो गए थे।

सड़क की तरफ लकड़ी के कुछ डिब्बे जैसे भी कुछ लोगों ने खड़े कर लिए थे, जिनमें छोटी-छोटी दूकानें थीं। पान-बीड़ी की दुकान, स्कूटर मरम्मत या सब्जी की दूकान। एक नन्हा-सा कारखाना, छाते और सूटकेस की मरम्मत का। एक मोची और एक हज्जाम। एक बिजली की सजावट-वाले मैकेनिक का खोखा।

डेढ़ घण्टे की उस कार्यवाही के बाद अब वहाँ का नजारा बिल्कुल ही दूसरा हो गया था। जमीन के जितने हिस्से में वे झोंपड़ियाँ और खोखे थे, वह हिस्सा खासा लम्बा-चौड़ा मैदान लगने लगा था। उस मैदान में ईंट, पत्थरों, बाँसों, चिथड़ों के ढेर अब इस तरह छितराये हुए पड़े थे, जैसे किसी युद्ध के बाद टूटे रथ, मरे घोड़े और खेत रहे सिपाही बिखरे हों। सहसा

वहाँ रहनेवाले हर प्राणी का कद जैसे लम्बा हो गया।

पुलिसवालों की ललकार के बाद, जो बच्चे डरकर चीखते हुए दूर तक भागते चले गए थे, वे खजूर के पेड़ों के बीच से इस सारी कार्यवाही को देखते रहे थे। पुलिस और नगरपालिका के दस्तों के वापस जाने के बाद वे फिर लौट आए। उनकी अपनी प्रतिक्रिया अपने वाल्दैन का अनुकरण ही ज्यादा थी। वे बच्चे रोने लगे, जिनके माँ-बाप रो रहे थे। कुछ बच्चे अपनी माँओं की तरह पुलिस की तरफ हवा में पत्थर फेंककर अपना गुस्सा उतारने लगे। यह प्रक्रिया ज्यादा देर नहीं चली।

नन्दू बढ़ई का छोटा बेटा मिर्ची चिल्लाया, "अबे ओए परमुए, तेरी गेंद ! तेरी गेंद मिल गई बे !"

"कहाँ ?" परमू चौंक गया। वह खुद आसपास के कूड़े से ऐसे ही कोई चीज खोज रहा था।

वह एक उम्दा, वजनी क्रिकेटवाली गेंद थी, जो परमू करीब डेढ़ बरस पहले लाया था। खरीदकर नहीं, सरकारी अफसरोंवाली कॉलोनी के पार्क से। चूँकि कई दिन से टी० वी० और रेडियो किसी क्रिकेट खेल का प्रसारण कर रहे थे, इसलिए लगभग हर जगह, हर बच्चा इसी खेल में मशगूल था। कुछ बच्चे सस्ती प्लास्टिकवाली गेंद उतने ही सस्ते बल्ले के साथ ईंटों के ढेर को विकेट बनाकर खेलते थे, तो कुछ बच्चे बाकायदा पेशेवर खिलाड़ियों-वाला सामान खरीद लाए थे। उस सामान में बच्चों के कद से बहुत भारी, उजले पैड और दस्ताने भी थे। उन्हें जरूर खेल की सारी बारीकियाँ आती होंगी, क्योंकि उन्होंने रेफरी और मैनेजर तक नियुक्त कर रखे थे। इन बच्चों का खेल जिस पार्क में हो रहा था, उसके चारों तरफ परमू जैसे कुछ बच्चे खड़े थे। गेंद जब कभी-कभी पार्क से बाहर आ जाती थी, तो इन्हीं में से कोई एक बच्चा उसे एहतियात से उठाकर वापस कर देता था। एक बार गेंद जब परमू की तरफ आई, तो उसने किसी कुशल खिलाड़ी की तरह रोकना चाहा, पर वह ऊँची ज्यादा थी। गेंद के गिरने की हल्की झलक उसे मिली थी, पर गेंद दिखी कहीं नहीं। खेलनेवाले बच्चों ने भी उसे खोजा, पर वह मिली किसी को नहीं। हारकर बच्चे दूसरी गेंद ले आए। परमू

बाकी खेल देखते हुए भी उसी खोई गेंद के बारे में सोचता रहा—आखिर वह गायब कहाँ हो गई, हो सकती है ?

खेल देखते-देखते अनायास ही उसकी निगाहें गेंद खोजने लगतीं। आखिर उसने गेंद देख ही ली थी। वह पास ही बन रहे मकान के सामने जमा ईंटों के दो चट्टों के बीच थी। परमू ने तुरन्त उधर से अपनी निगाह हटा ली।

उस गेंद को वह उसी वक्त नहीं लाया। रात जब कालोनी के लगभग सारे बच्चे टी० वी० देखने में मशगूल थे, परमू वह गेंद निकाल लाया था।

समूची बस्ती में इतनी उम्दा और नायाब गेंद किसी के पास नहीं थी। बहुत देर तक वे लोग आपस में मिलकर उसका बारीकी से मुआयना करते रहे। इससे पहले भी उन्होंने बहुत-सी गेंदें देखी थीं और उनसे खेले भी थे। फज्जे ने तो कागज के एक गोले पर चिथड़े और सुतलियाँ लपेटकर ही गेंद तैयार कर ली थी। आसपास फैली बहुत-सी कालोनियों में कुछ खिलौने उन्हें मिल जाते थे, जैसे गुड्डे-गुड़ियाँ, टिन की मोटरें और गेंद। रबर की कुछ खोखली गेंदें फटी हुई होती थीं और ऊपर से साबुत होने का भ्रम पैदा करती थीं। ऐसी गेंदों को ये लोग तुरन्त फाड़ देते थे, ताकि उन्हें दोबारा धोखा न हो।

इस बार जो गेंद मिली थी, वह अद्‌भुत ही थी। उसे बहुत बार उन लोगों ने छू कर देखा। गगन ने जोश में आकर उसे उछालकर देखना चाहा, तो परमू उससे लगभग लड़ ही बैठा था।

इस गेंद को खेलना भी एक समस्या थी। किसी टूटे तख्ते से या बाँस के टुकड़े से खेलना इस गेंद की बेइज्जती ही थी, इसलिए परमू और उसके साथियों ने मिर्ची से दोस्ती की थी। मिर्ची नन्दू बढ़ई का सबसे छोटा बेटा था और बाप के साथ चारपाइयों के पाये बनाने के बजाय स्कूटर मैकेनिक लतीफ के साथ लगा रहता था। रुखानी-बसूले के बजाय रिंच और पेचकस में उसे एक खास तरह की अंगरेजियत महसूस होती थी। इसीलिए वह बस्ती के बाकी बच्चों से ज्यादा मिलता-जुलता भी नहीं था। मिर्ची को राजी करने में ज्यादा मुश्किल नहीं हुई थी। उसके बाप ने उन लोगों के लिए एक अच्छा-सा बल्ला बना दिया था। पर पतले तख्ते से जो बल्ला उसने बनाया

था, वह असली गेंद के साथ टकराकर जल्दी कहीं बीच से फट गया। तब वे लोग एक बाँस के टुकड़े से गेंद खेलते रहे थे। शायद यह बाँस का कुसूर रहा हो या चारों तरफ कबाड़ की तरह फैली झोंपड़ियों का कि जल्दी ही वह गेंद गायब हो गई। एक जोरदार प्रहार के बाद जो वह उछली, तो पता ही नहीं चला, कहाँ चली गई। गेंद की खोज में परमू और उसके साथी कई झोंपड़ियों की छतों पर चढ़े और तोड़ देने के अपराध में खासी गालियाँ खाईं। कई रोज परमू जगह-जगह उसे खोजता रहा था। उससे ज्यादा लगन से उसके दूसरे साथियों ने उसकी तलाश की थी। पर गेंद नहीं मिलनी थी, तो नहीं ही मिली।

बारिश और धूप में बदरंग वही गेंद हाथ में लिए हुए मिर्ची खड़ा था। परमू ने देखा और झपटकर गेंद हाथ में ले ली—वही है। उसने उसका मैल अपने कपड़ों पर रगड़ा, पर वह साफ नहीं हुई। जो भी हो, गेंद तो मिल गई। अनन्तराम चौरसिया का पान-सिगरेटवाला खोखा पहले ही पुराना और जर्जर था। नगरपालिकावालों की तोड़फोड़ से एकदम पसर गया था। उसका एक पाया उठाकर परमू ने तोला—इससे खेला जा सकता है। यह जल्दी फटेगा भी नहीं।

परमू ने जरूरत से ज्यादा उत्साह से अपने बाकी दोस्तों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। उस दुर्लभ गेंद के दोबारा मिलने की बात ने हर किसी में एक नई उत्सुकता पैदा कर दी और जल्दी ही वे नगरपालिका की तोड़-फोड़ भूल गए। अपने परिवारों को रोते-झींखते और मलबे से उलझता छोड़कर वे बस्ती के पीछे की तरफ नाले से सटी उस खाली जगह पर आ खड़े हुए, जहाँ धोबी अपने कपड़े सुखाया करते थे। आज के इस ऊधम के बाद धोबी भी वहाँ से गायब थे। उनके क्रिकेट खेलने के लिए इससे उम्दा जगह उन्हें आज तक नहीं मिली थी।

अभी वे क्रिकेट खेलने की तैयारी कर ही रहे थे कि एक ऊँची चीख, जैसे कोई किसी सूअर को मारने की कोशिश कर रहा हो, गूँज गई। वह चीख रुकी नहीं। पान-बीड़ी के खोखेवाले की माँ आ गई थी और वह छाती पीट-पीटकर रोती हुई बहुत तेज आवाज में नगरपालिकावालों को कोस

रही थी। उसकी इस आवाज से शह पाकर दूसरी औरतों ने भी नये सिरे से चीखना शुरू कर दिया।

क्रिकेट का खेल थोड़ी देर के लिए रुक गया, क्योंकि हर बच्चे को लगा, चीखनेवाली औरतों में उसकी भी माँ शामिल है।

इसी बीच सहसा चिल्लाकर फोहश गालियाँ देते हुए मजीद ने छोटे को धक्का दिया। छोटे का पेट बचपन से ही बेढंगे तरीके से बढ़ गया था। धक्के से लड़खड़ाकर वह लुढ़क गया। इस पर वह भी उतनी ही भद्दी गालियाँ बकने लगा।

गेंद की महिमा से थोड़ा गौरवान्वित परमू किसी बुजुर्ग की तरह वैसी गालियाँ देकर चीखा—"क्या है बे ? उसको धक्का क्यों मार दिया ?"

मगर इस झगड़े में बाकी बच्चे शामिल नहीं हुए, बल्कि भुनभुनाते हुए वे खुद एक हद तक छोटे की आलोचना करने लगे। इस बात ने परमू को चकित कर दिया। वह बौखलाकर बाकी बच्चों का मुँह देखने लगा—"अबे तो बात क्या है ?"

जवाब में मजीद और ज्यादा चुनिन्दा गालियाँ बकने लगा।

बात सचमुच गम्भीर थी।

पिछले रोज अनायास ही मजीद ने एक नये खेल की ईजाद कर ली थी। बस्ती से दूर पीछे की तरफ, जहाँ खाली मैदान खत्म होता था, खजूर का एक छोटा-सा जंगल था। इन दिनों ठेकेदार यहाँ ताड़ी उतरवा रहा था। ताड़ी उतारने के काम में मजीद का बाप बहुत कुशल था। सच तो यह है कि ऊँची और मुश्किल जगह चढ़ने का उसे खासा अभ्यास था। उसने तीन बार बिजली के ट्रांसफार्मर उतारे थे और बिजली के तार तो बहुत बार काटे थे। बिजली का ट्रांसफार्मर उतारने में एक बार उसे सजा भी हो गई थी। इस हादसे का वह बहुत खुशी से बयान करता था।

बाप जब ताड़ी उतारने जाता था, तो मजीद भी उसके साथ हो लेता था। मजीद के पीछे-पीछे उसी की उम्र के कुछ और बच्चे भी वहाँ पहुँच जाते थे। उन्हें ताजी उतारी, थोड़ी बदबू छोड़ती बेहद मीठी ताड़ी जो मिल जाती थी। इसे पीने के बाद वे सब दोपहर तक वहीं ठेकेदार के लम्बे-चौड़े

झोंपड़े के आसपास खेलते रहते थे। कल भी वे वहीं थे। झोंपड़े के अन्दर इकट्ठा की जा रही ताड़ी की दुर्गन्ध और बड़ी-बड़ी मक्खियों की आवाजों में अपनी चीखें मिलाते हुए वे एक-दूसरे को खोज और खदेड़ रहे थे।

जब वे इस बेमतलब खेल से ऊब गए, तो खजूर के उस छोटे-से जंगल के पीछे से होकर बहनेवाले एक नाले में उतर आए। इस नाले में उन्हें कभी-कभी एकाध छोटी मछली मिल जाती थी, जिसे वे बहुत मेहनत के साथ पकड़ लेते थे। लेकिन दूसरी मछली चूँकि कभी हाथ नहीं आती थी, इसलिए पकड़ी हुई छोटी मछली को, जो कब की मर चुकी होती थी, वे मिट्टी में पटक देते थे।

नाले में उगी लम्बी-लम्बी घास की फुनगियों पर नन्हे-नन्हे हवाई जहाजों जैसे मासूम टिड्डे मँडरा रहे थे। पकड़े जाने पर वे बड़ी तेजी से पर फड़फड़ाते थे।

मजीद ने एक टिड्डा पकड़ लिया। वह तेजी से पंख फड़फड़ाने लगा। मजीद उसे अपने चेहरे के करीब ले आया—"अबे पंखा ! साला बिजली का पंखा ! ऑटोमेटिक। साला हवा मारता है।"

उसने टिड्डा दूसरे बच्चे के चेहरे के करीब कर दिया—उसने भी हवा महसूस की। अब सभी बच्चे टिड्डे के पंखे से खेलने लगे।

मजीद ने इसके बाद आसपास से बिच्छू घास की बालियाँ इकट्ठा कीं। इन बालियों के रोएँ आपस में सटा देने से ये आपस में जुड़ जाती थीं। ऐसी बहुत-सी बालियों को जोड़कर उसने एक डिब्बा जैसा बना लिया और एक टिड्डा उसके अन्दर बन्द कर दिया—"देख बे ! इन्तजाम पक्का। जब गरमी लगे, पिंजरे में से पंखा निकालो और हवा ले लो।"

इसके बाद और बच्चों ने भी उसी तरह के पिंजरे बना लिए। कुछ पिंजरों में उन्होंने टिड्डों के बजाय दूसरे कीड़े भी बन्द कर लिए, जैसे रोएँदार रंगीन इल्ली, तितली, गुबरैला।

गुबरैला जहूर ने पकड़ा था। इस कीड़े की आदत सभी बच्चों को पता थी। यह बहुत घिनौनी गन्दगीवाला कीड़ा था। आमतौर पर आदमी की विष्ठा की एक गोली तैयार कर लेता था और पिछले पैरों से तेजी से लुढ़काता हुआ अपने सूराख तक ले जाता था।

उसे देखते ही मजीद ने जुगुप्सा जाहिर करते हुए चीख मारी—"अबे साले, गन्दगी ढोनेवाला कीड़ा।"

"अबे सुन !" तोंदू ने बुद्धिमानी जताते हुए कहा, "मैं बताऊँ, ये साला कीड़ों का मेहतर है।"

"तब तो और मजेदार बात है।" लल्लू बोला, "ये साला बाकी पिंजरों की टट्टी साफ करेगा।"

अब वे इस बात का अनुमान लगाने लगे कि कौन कीड़ा क्या काम करेगा। मिर्ची फौरन चिल्लाया, "मेरी तितली नाचेगी। नौटंकी करेगी, नौटंकी। औरत का प्यारवाली फरीदा। वाह !"

"अबे तो चल, एक केंचुआ भी पकड़ते हैं। वो बोरिंग करेगा हैंडपाइप। हैंडपाइप लगाएगा।" मजीद ने सुझाव दिया।

उनकी बस्ती के बहुत-से लोगों के समानान्तर काम करनेवाले कीड़े उन्हें मिल गए। उन्हें विश्वास हो गया कि उन्होंने इन पिंजरों में लगभग एक समूची बस्ती ही बन्द कर ली है। इस बस्ती को बसाने के लिए अब एक ठीक-सी जगह की जरूरत थी। झोंपड़ियों के पीछेवाले मैदान में दूर-दूर तक धोबी अपने कपड़े फैला देते थे। खजूर के पेड़ों के आसपास की कोई भी जगह निरापद नहीं थी, क्योंकि वहाँ ताड़ी निकालनेवालों के पैरों से रौंदे जाने का खतरा था।

धोबियोंवाले मैदान और खजूर के जंगल के बीच एक टूटी हुई कब्र थी, एक नन्हे-से टीले पर। कब्र के पास दो आम के टेढ़े-मेढ़े दरख्त थे। यह जगह उन्होंने अपनी बस्ती के लिए चुनी थी। यों भी चूँकि यही जगह खाली रहती थी, इसलिए बस्ती के बच्चों ने यहाँ खेलने की आदत बना ली थी।

नायाब गेंद के दोबारा मिल जाने के उत्साह में वे थोड़ी देर के लिए यह बात बिल्कुल ही भूल गए थे कि कल ही उन्होंने यहाँ अपनी एक बस्ती बसायी थी। उसी बस्ती के कुछ पिंजरों पर छोटे के दोनों पैर भरपूर पड़ गए थे। उनमें से एक पिंजरा तो वही था, जिसमें गायिका नर्तकी फरीदा बन्द थी।

बात पता चली, तो परमू हँसने लगा, "साला, फरीदा ! अबे, ये भी

मजेदार बात है। नगरपालिकावालों ने हमारी बस्ती तोड़-फोड़ दी और छोटेलाल साले ने मजीद की बस्ती तोड़-फोड़ दी। साला, ये तुंदियल छोटू हरामजादा···इस हरामी ने बस्ती उजाड़ दी···देखो तो, भूतनी का साला, नगरपालिका हो गया ऐ !"

छोटे लज्जित मुस्कराहट के साथ पीछे हट गया। मजीद और दूसरे बच्चे जल्दी-जल्दी टूटे पिंजरे देखने लगे। पिंजरों में से कई के कीड़े गायब थे और कई मरे हुए थे। जो नहीं कुचले थे, उनमें भी।

"अबे, इनमें तो पहले ही महामारी फैल गई थी। हैजा हो गया होगा, हैजा।" परमू ने कहा।

"चल आज फिर पिंजरे बनाते हैं।" मजीद ने कुचले पिंजरों के साथ बाकी भी फेंकते हुए उत्साह से कहा।

"अबे साला, छोटे फिर वही करेगा।"

इन्हीं संवादों से इस बार फिर एक बिल्कुल ही नए खेल की ईजाद हो गई। झोंपड़ियोंवाली बस्ती और नगरपालिका के तोड़-फोड़वाले दस्ते का खेल।

खजूर की पत्तियों और घास से छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ बनने लगीं और सिगरेट और माचिस की डिब्बियों से दूकानोंवाले खोखे। यह नन्ही-सी बस्ती खासी कारीगरी से तैयार हुई थी। कुछ के छप्पर बाकायदा फूस बाँधकर बने थे। ऐसी चीजें तैयार करने का जैसे उन्हें पुश्तैनी अनुभव था। झोंपड़ियों के बीच प्यारे ने छोटी-छोटी टहनियाँ तोड़कर उनके ढेर से लकड़ी की एक टाल खोल ली, तो मिराज ने लम्बी सींकें इकट्ठा करके बाँसवाले की बाँसमण्डी तैयार कर ली। धूल-मिट्टी में उन्हें एक ताले का जंग लगा कुण्डा मिल गया था। उससे हैण्डपाइप तैयार हो गया।

झोंपड़ियोंवाली यह बस्ती अब तोड़ी जाने के लिए पूरी तरह तैयार थी।

"बस्तीवालो, तैयार हो जाओ। दो मिनट में बस्ती को मिट्टी में मिला दिया जाएगा।" परमू ने नाटकीय अन्दाज में आवाज लगाई।

"ठहरो-ठहरो !" मिराज ने आवाज लगाई, "अबे, ये तुन्दियल आयेगा ! साले, तू सेठ है। समझा ?"

छोटे ही नहीं, बाकी भी समझ गए। पिछले दिनों उन्होंने कई फिल्में देखी थीं। कुछ दिन पहले खेमसिंह की लड़की की शादी थी। उसने पीछे के मैदान में तम्बू लगाकर बारात खिलाई थी। उस वक्त वी० सी० आर० पर लगातार छह फिल्में दिखाई गई थीं। फिल्में बहुत मजेदार थीं। बच्चों ने उसके बहुत-से चरित्रों की बहुत दिनों तक नकल की थी। वे लोग फौरन समझ गए कि नगरपालिका के बजाय सेठ ज्यादा रोचक रहेगा। उन्हें संवाद और दृश्य में भूमिका समझाने की जरूरत नहीं थी। छोटे फौरन आगे आया और नाटकीय अन्दाज में बोला, "अबे ओ बस्तीवालो !"

अचानक अपना संवाद रोककर वह नाले की तरफ दौड़ गया।

"अबे, इसको क्या हो गया ?" परमू ने उसे घूरते हुए पूछा।

"सेठ साले को टट्टी लग गई है।" मिराज ने कहा। सभी हँसने लगे। तब तक छोटे दौड़ता हुआ वापस आ गया। उसने हाथ में एक छड़ी ले रखी थी।

"ये क्या है ?"

"छड़ी। छड़ी है। सेठ के हाथ में छड़ी होती है।" छोटे ने गर्व से छड़ी घुमाई, "अरे बस्तीवालो, हरामजादो ! दो मिनट में बस्ती खाली कर दो, वरना आग लगा दूँगा। गोलियों से सब भून दिए जाओगे।"

संवाद बोलने के बाद छोटे ने फिल्म के खलनायक की ही तरह मुँह टेढ़ा करके भौंहें ऊपर-नीचे कीं। परमू और मिराज अब उसके गुण्डे बन गए थे। मिर्ची, प्यारे और मजीद आगे आए और हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठते हुए बोले, "हम पर दया करो माई-बाप। हमारे घर न उजाड़ो। हम बरबाद हो जाएँगे मालिक, दया करो···।"

छोटे इनकी पीठ पर छड़ी मारता हुआ चीखा, "क्या देखते हो ! आगे बढ़ो। तोड़ दो बस्ती और जो सामने से न हटे, उस पर भी ट्रैक्टर चढ़ा दो।"

वे लोग बुलडोजर को भी ट्रैक्टर ही समझते थे। परमू अपनी गेंद सुथने के नाड़े में अटकाकर काल्पनिक बुलडोजर चलाने लगा। वह मुँह से आवाज भी निकालता जा रहा था। उसने पैरों से सचमुच ही प्यारे और मजीद को धकेल दिया। प्यारे और मजीद ने पहिये से कुचलकर छटपटाने और मरने

का अभिनय भी किया। अब बुलडोजर बस्ती को गिराने जा रहा था। तभी लल्लू उछलकर सामने आ गया। फिल्म के नायक की तरह कमर पर हाथ रखकर दोनों टाँगें फैलाए उसने ललकारा, "अरे ओ सेठ के कुत्तो, जिसे अपनी मौत प्यारी हो, वो सामने आ जाए।"

परमू बुलडोजर बनना छोड़कर बोला, "अबे ये क्या ? साले, हट।"

"अबे ओ परमुए के बच्चे !" लल्लू चीखा, "उलटा करके ट्रैक्टर घुसेड़ूँगा, तो मुँह से बाहर आ जाएगा।"

मरा हुआ मजीद उठकर बैठ गया, "अबे ओए लल्लू, साले क्यों खेल बिगाड़ रहा है !"

मजीद ने अपनी झोंपड़ी के अन्दर एक भारी पत्थर चुपचाप रख दिया था। वह जानता था, जो भी उसमें ठोकर मारेगा, चिल्लाएगा।

"अबे, तू तो पहले ही मर गया साले, चुप कर !" लल्लू ने उसे हड़का दिया, "और तुम लोग भी सुन लो, जिसने झोंपड़ी की तरफ पाँव बढ़ाया, साले की टाँग तोड़ दूँगा।" सब जानते थे, लल्लू में ताकत थी। सबसे ज्यादा। वह उनमें से किसी का भी हाथ मरोड़ सकता था, या किसी को भी उठाकर पटक सकता था।

प्यारे भी उठकर बैठ गया। छोटे उसे समझाने लगा, "बात माना कर यार, ठीक-ठाक खेल चल रहा था।"

"अबे, तो ये भी खेल सही।" लल्लू बोला।

मिराज ने कहा, "अभी-अभी तो देख चुके हो। फिल्मोंवाली बात अलग होती है। देखा नहीं, नगरपालिकावाले सारे घर गिरा गए। रोका किसी ने ?"

"नहीं रोका होगा। मैं तो रोकूँगा। जिसमें हिम्मत हो, आगे आ जाए।" लल्लू ने ललकारा।

छोटे को अभी तक पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ था कि खेल बदल चुका है। उसने मिराज को आवाज दी, "कोतवाल साहब, इस गुण्डे को गिरफ्तार कर लो।"

मिराज गुण्डे से कोतवाल बन तो गया, मगर आगे नहीं बढ़ा। लल्लू ने उसकी तरफ घूँसा तानकर कहा, "क्यों बे, तू साले कोतवाल बनेगा ?"

मिराज घबराकर पीछे हट गया, "कोतवाल किसी और को बनाओ, मैं तो तुम्हारा गुण्डा हूँ।"

झोंपड़ियों की तोड़-फोड़ के खेल में अचानक पैदा हुए इस गतिरोध से सभी को खीज होने लगी। तभी ताड़ीवाले ठेकेदार के बड़े-से झोंपड़े से बाहर आकर लल्लू के बाप ने आवाज दी, "अबे ओ लल्लू !"

"क्या है ?"

"अबे जरा देख जाकर, रेढ़ेवाला रुल्दू कहाँ मर गया ! साले को बोल, ठेकेदार साहब बुला रहे हैं।" हुक्म देकर उसका बाप फिर अन्दर चला गया।

बाकी बच्चों ने निश्चय ही चैन की साँस ली होगी और लल्लू यह भाँप भी गया होगा, क्योंकि वह जाते-जाते बोला, "एक बात बता दूँ। मैं अभी आ रहा हूँ। इस बीच अगर किसी ने झोंपड़ियों को हाथ भी लगाया, तो समझ लेना।"

उसकी इस धमकी से सभी सकते में आ गए।

जाते-जाते लल्लू ने एक बार उन्हें फिर धमकाया और नाले के पुल की तरफ दौड़ गया।

उसके जाने के बाद बच्चों ने बस्ती की तरफ देखा। नन्हे छप्परों और छोटे-छोटे घरौंदोंवाली वह बस्ती सहसा अच्छी लगी। छोटे-छोटे खोखेवाली दूकानें और झोंपड़ियों के बीच की गलियाँ जैसे उनकी तरफ देखकर मुस्कराने लगीं।

"अबे रहने दो। इस साली को और सजायेंगे।" परमू ने कहा। बच्चे इस बात से तुरन्त सहमत हो गए।

"अबे हाँ," मिराज बोला, "यहाँ एक तख्त बनाकर डाल देते हैं बे। उसके आगे दरी बिछेगी। रात में यहाँ हीराबाई नाचेगी। क्यों बे ?"

"दिया लेते आना बे। उसकी गैस-बत्ती बना लेंगे। 'औरत का प्यार' खेल होगा बे। औरत का प्यार।"

वे एक बार फिर नये उत्साह से सींकों का तख्त बनाने में जुट गए। चुप रहनेवाला मिर्ची गाने लगा, ("नहीं किसी ने दिया है तुमको ये अख्तियार, बिला खता जो इस तरह रैय्यत डालो मार···कुड़कुड़-कुड़कुड़ धुम···।")

एहसास

दुनिया का गहरा से गहरा अँधेरा भी कभी-कभी उन आँखों के सामने झीना पड़ जाता है जो उस वक्त कुछ भी देखने से इनकार करना चाहती हों। हमदम साहब अँधेरे के इस झीनेपन से डर रहे थे। अब उन्हें मृत्यु का नहीं, रोशनी का भय था। रात अभी मुश्किल से आधी बीती थी। नहर के किनारे उगे पतावर की लम्बी धनुषाकार पत्तियों का एक बड़ा गुच्छा उनकी आँखों और आकाश के बीच बहुत साफ उभर आया था जैसे काली रोशनीवाला कोई अनार छूटकर ठहर गया हो। हवा एकदम ठहरी हुई थी और हमदम साहब की निगाहें सिर्फ दो चीजें देख पा रही थीं, बारीक लम्बी तलवारों जैसी पतावर की काली पत्तियाँ और उनके पीछे किसी खाली पड़े सिनेमाघर के ठंडे परदे की तरह खिंचा हुआ आसमान। अब उनका ध्यान गया, नीचे पानी है, टखने से ऊपर तक, उनके पाँव भिगोता हुआ। बहुत देर से ठहरी हुई या घुटी हुई साँस सहसा उनके फेफड़ों ने इस तरह खींची जैसे पानी में लम्बी डुबकी लगाकर आए हों और इसी साँस के साथ एक मितली उठी। इस बार पसलियों के दर्द से नहीं, न खौफ से। मितली एक दुर्गंध से उठी, खून की दुर्गंध, अपने खून की या दूसरों के खून की।

इस बीच शायद वे बेहोश हो गए थे क्योंकि अपनी पसलियों से लेकर कंधे और कान तक आग से जलाए जाने की जैसी तकलीफ वे फिर महसूस करने लगे। यह गनीमत थी कि अब वहाँ सिर्फ वह असह्य जलन ही थी वरना जिस वक्त उन्हें गोली लगी थी उस वक्त उन्हें ऐसा लगा जैसे किसी ने बहुत वजनी कुल्हाड़ी से उनका आधा हिस्सा चीर दिया हो और चीरने के बाद उनकी पसलियाँ मरोड़ रहा हो। तभी वे चीखे थे। बेसाख्ता। बहुत दर्दभरी आवाज में। अब उन्होंने गौर किया, क्या वे अकेले ही चीखे